द्वितीयः पाठः

सुभाषितानि

(संकलित)

[मानव-जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने के लिए जो शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें सुभाषित वचन कहते हैं। ***उदाहरणार्थ–*** *अन्याय से प्राप्त किया गया धन दस वर्ष के बाद समूल नष्ट हो जाता है। आलसी, कपटी, धूर्त्त कभी भी धन नहीं प्राप्त कर सकते हैं। अत्यन्त सीधापन स्वयं के लिए हानिकारक होता है। जो समूह अपने को ही सब कुछ मानता हो, वह नष्ट हो जाता है। विद्या से विनम्रता प्राप्त होती है। गुरुओं की प्रशंसा सम्मुख, मित्र और भाई-बन्धुओं की पीठ पीछे, कार्य समाप्त होने पर नौकरों की प्रशंसा करनी चाहिए। परन्तु पुत्रों की प्रशंसा कभी भी नहीं करनी चाहिए। दरिद्रता धैर्य से शोभा पाती है, कुरूपता शिष्ट व्यवहार से शोभा पाती है। बासी या स्वादहीन भोजन गर्म होने से स्वादिष्ट होता है। बुरे अर्थात् गन्दे वस्त्र स्वच्छ होने पर शोभा पाते हैं आदि। प्रस्तुत पाठ में विभिन्न ग्रन्थों से इसी प्रकार के सुभाषित वचन संग्रहीत किये गये हैं।]*

अन्यायोपार्जितं वित्तं दश वर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति।।१।।

अतिव्ययोऽनपेक्षा च तथाऽर्जनमधर्मतः।
मोक्षणं दूर संस्थानं कोष-व्यसनमुच्यते।।२।।

नालसाः प्राप्नुवन्त्यर्थान् न शठाः न च मायिनः।
न च लोकापवाद्भीता न च शश्वत् प्रतीक्षिणः।।३।।

वरं दारिद्र्यमन्यायप्रभवाद् विभवादिह।
कृशताऽभिमता देहे पीनता न तु शोफतः।।४।।

अर्थ-नाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।
वञ्चनं चाऽपमानं च मतिमान्न प्रकाशयेत्।।५।।

अतिथिर्बालकः पत्नी जननी जनकस्तथा।
पञ्चैते गृहिणः पोष्या इतरे च स्वशक्तितः।।६।।

नात्यन्तं सरलैभाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलीम्।।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र कुब्जास्तिष्ठन्ति सर्वत्र।।७।।

मौनं काल-विलम्बश्च प्रयाणं भूमि-दर्शनम्।
भृकुट्यन्यमुखी वार्त्ता नकारः षड्विधः स्मृतः।।८।।

प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः परोक्षे मित्र-बान्धवाः।
कर्मान्ते दास-भृत्याश्च पुत्रा नैव च नैव च।।९।।

क्षणे तुष्टाः क्षणे रुष्टास्तुष्टा रुष्टाः क्षणे क्षणे।
अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयङ्करः।।१०।।

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधं आलस्यं दीर्घसूत्रता।।११।।

विद्यया विनयाऽवाप्तिः सा चेदविनयाऽऽवहा।
किं कुर्मः कं प्रति ब्रूमः गरदायां स्वमातरि।।१२।।

सर्वे यत्र विनेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्त्वमिच्छन्ति तद् वृन्दमवसीदति।।१३।।

सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः।।१४।।

दरिद्रता धीरतया विराजते कुरूपता शीलतया विराजते।
कुभोजनं चोष्णतया विराजते कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते।।१५।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नांकित सूक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए :
   (क) कृशताऽभिमता देहे पीनता न तु शोफतः।
   (ख) सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
   विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीनाः।।
२. निम्नलिखित श्लोकों का संस्कृत में अर्थ लिखिए :
   (क) षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
   निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता।।
   (ख) अतिथिर्बालकः पत्नी जननी जनकस्तथा।
   पञ्चैते गृहिणः पोष्या इतरे च स्वशक्तितः।।
३. श्लोक ४, ८, १२ तथा १५ की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

इस पाठ की जो सूक्तियाँ आपको अधिक प्रभावित की हों, उनकी एक सूची बनाकर कण्ठस्थ करें।

●●●